उपसंहार

"राजी सेठ का समग्र साहित्य : एक अनुशीलन" इस विषय का अध्ययन करने के पश्चात अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य सामने आ गए जो निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत है -

साहित्य एक ऐसी विधा है; जिसने संसार में मनुष्य के विचारों को गति देकर समाज की परंपराओं में परिवर्तन करवा के धर्म, राष्ट्र, जाति, वर्गगत भावनाओं को मिटाकर मानव को विश्वबंधुत्व की भावना से अनुप्रणित किया है | साहित्य और समाज परस्पराश्रित है | साहित्यकार भी एक सामाजिक प्राणी है | वह अपने साहित्य के लिए विषय सामग्री समाज से ग्रहण करता है | साहित्य और समाज के संबंध की तरह मानव इतिहास और साहित्य का भी प्रगाढ़ संबंध है | इतिहास कालीन घटनाएँ,परिस्थिती साहित्य को प्रभावित करती है | हिंदी साहित्य के आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल के साहित्य पर भी उस समय की विभिन्न परिस्थितियों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है | हिंदी साहित्य में आधुनिक काल के प्रादुर्भाव के लिए राजनीतिक,आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक परिस्थितियाँ ही उत्तरदायी है |

आधुनिक युग में धर्म,दर्शन, चित्र, साहित्य आदि सभी के प्रति नये दृष्टिकोण का आविर्भाव हुआ | उपन्यास विधा आधुनिक युग की ही उपज है | उपन्यास यथार्थधर्मी विधा है | उपन्यास में मानवीय जगत और जीवन की घटनाओं,समस्याओं का यथार्थ,वास्तविक चित्रण होता है | आधुनिक युग में उपन्यास अपनी प्रभावोत्पादकता और लोकप्रियता की दृष्टि से साहित्य का सर्वाधिक जीवन संपन्न और महत्त्वपूर्ण अंग है | हिंदी साहित्य में उपन्यास के क्षेत्र में प्रारंभिक उपन्यास लिखनेवाले उपन्यासकार के रूप में 'श्रद्धाराम फुल्लौरी' नाम उल्लेखनीय है | श्रद्धाराम फुल्लौरी जी के 'भाग्यवती' उपन्यास को हिंदी का प्रथम उपन्यास कहा गया है | प्रारंभिक

युग में लाला श्रीनिवासदास, बालकृष्ण भट्ट, किशोरीलाल गोस्वामी, राधाकृष्णदास,अयोध्यासिंह उपाध्याय आदि उपन्यासकारों ने उपन्यास के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है | हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद सम्राट बने | उन्होंने इस क्षेत्र में उद्देश्यपूर्ण लेखन की मशाल उठाई | अस्पृश्यता,निर्धनता,जमींदारों द्वारा किसानों का शोषण,दहेज प्रथा,सांप्रदायिक वैमनस्य, अंधविश्वास,निम्न वर्ग के शोषण, अनमेल विवाह आदि समस्याओं ने उन्हें लेखन के लिए प्रेरित किया | प्रेमचंद ने प्रेमाश्रम, निर्मला, गोदान, गबन, कायाकल्प, रंगभूमि, कर्मभूमि आदि उपन्यासों की रचना की | प्रेमचंद की उपन्यास यात्रा आदर्शवाद से यथार्थवाद तक मंजिल तय करने का इतिहास है |

प्रेमचंद युगीन उपन्यासकारों में जयशंकर प्रसाद, विश्वम्भरनाथ कौशिक,जैनेंद्र कुमार,वृंदावन लाल वर्मा, उपेंद्रनाथ अश्क प्रभृति की गणना की जा सकती है | प्रेमचन्दोत्तर युग में भी अनेक उपन्यास लिखे गए | प्रेमचंद के बाद जो उपन्यास लिखे गए,उसमें विषयवस्तु और शिल्प शैली दोनों में अपूर्व विविधता और विस्तार का समावेश हुआ | इस युग के उपन्यासकारों में डॉ.रांगेय राघव, राजेन्द्र यादव, इलाचन्द जोशी, अज्ञेय,फणीश्वरनाथ रेणु आदि उल्लेखनीय हैं | हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में सामाजिक,ऐतिहासिक, जासूसी, तिलस्मी, मनोवैज्ञानिक, आँचलिक प्रकार के उपन्यास लिखे गये |

हिंदी साहित्य में उपन्यास विधा की तरह कहानी विधा का भी प्रादुर्भाव हुआ | कहानी विधा भी आधुनिक युग में विकसित महत्त्वपूर्ण विधा है | हिंदी कहानी विधा का प्रारंभ बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ | हिंदी कहानी लिखनेवाले कहानीकारों को प्रारंभिक कहानीकार, प्रेमचंद, प्रेमचन्द युगीन कहानीकार, प्रेमचन्दोत्तर कहानीकार,नयी कहानी के कहानीकार और समकालीन कहानीकार आदि शीर्षकों के अंतर्गत लक्षित किया गया है | हिंदी

साहित्य में प्रथम कहानी लिखने का श्रेय 'किशोरीलाल गोस्वामी' को जाता है | उपन्यास और कहानी में तत्वों की समानता होते हुए भी दोनों में अंतर है | उपन्यासकार जीवन के व्यापक अंगों पर प्रकाश डालता है तो कहानीकार जीवन की किसी एक झाँकी को प्रस्तुत करता है |

आधुनिक हिंदी साहित्य पर अस्तित्ववादी, मनोविश्लेषणवादी, मार्क्सवादी, यथार्थवादी, मानवतावादी विचारधाराओं का प्रभाव परिलक्षित होता है | आज अधिकांश लेखक एवं लेखिकाएँ किसी-न-किसी वाद के प्रति समर्पित हैं, किन्तु राजी सेठ उन लेखिकाओं की पंक्ति में आती है जो किसी वाद के चकाचौंध से प्रभावित नहीं हुए और जिन्होंने व्यक्तिपरक और समाजपरक लेखन किया है |

राजी सेठ आठवें दशक की महिला लेखिका है | राजी सेठ का जन्म संस्कारी परिवार में ४ अक्तूबर १९३५ को हुआ | अर्थाभाव से संघर्ष करते हुए भी उनके माता-पिता ने उन्हें पढ़ाई में पूरा सहयोग दिया | राजी सेठ ने अपने पिता में जो आदर्शवादी भावना थी,उसे ग्रहण करने का प्रयास किया | राजी सेठ की माँ शिक्षा के हक में कुछ ज़्यादा निर्मम थी | माता-पिता के संस्कारों के कारण ही राजी सेठ का लेखकीय व्यक्तित्व निर्माण हुआ | उनकी प्रथम कहानी अज्ञेय द्वारा संपादित नया प्रतीक पत्रिका में 'समांतर चलते हुए' शीर्षक से प्रकाशित हुई | उसके बाद उनकी एक के बाद एक कहानी प्रकाशित होती गई | यह अनवरत सिलसिला चलता रहा | राजी सेठ की गद्यात्मक रचनायें प्रकाशित होने लगी |

राजी सेठ एक सशक्त एवं अर्थवत्तापूर्ण उपन्यास लेखिका मानी जाती है | उन्होंने अपने उपन्यासों में कथ्य के साथ चरित्र को भी महत्व दिया है | राजी सेठ 'तत-सम' और 'निष्कवच' यह दो उपन्यास लिखे हैं | 'तत-सम' उपन्यास विधवा पुनर्विवाह की समस्या पर आधारित है | उन्होंने 'तत-सम' में नारी की सामाजिक समस्या का समाधान ढूँढकर उसे हमारे

सामने चित्रित किया है | इस उपन्यास में सिर्फ सामाजिक समस्या का ही नहीं बल्कि आंतरिक जिजीविषा, मनोवैज्ञानिकता, दार्शनिक और बौद्धिकता का बड़ी कुशलता पूर्वक अंकन किया है | उनका 'निष्कवच' उपन्यास मूल्य संक्रमण के दौर से गुजर रही युवा-पीढ़ी के संघर्ष की गाथा है | आज की युवा-पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति के मोह में अपने ही परिवार वालों से, देश से अलग होती जा रही है |

राजी सेठ सिर्फ एक उपन्यासकार ही नहीं है बल्कि एक अनुवादक भी है | उनके प्रयासों के कारण ही जर्मन कवि रिल्के के पत्र भारत में हिंदी में पहली बार प्रकाशित हुए | उन्होंने जर्मन कवि रिल्के के सौ अंग्रेजी पत्रों का हिंदी में अनुवाद किया है | 'पत्र युवा कवि के नाम' पुस्तक में कुल दस पत्र है जो रिल्के द्वारा काप्पुस को लिखे गये थे | काप्पुस की कविताओं को पढ़ कर रिल्के ने जो राय उसे दी थी, वह इन दस पत्रों के माध्यम से दी थी | 'रिल्के के प्रतिनिधि पत्र' में कुल नब्बे पत्र हैं |

राजी सेठ ने उपन्यास और अनुवाद लेखन के साथ कहानी के क्षेत्र में भी कलम चलायी है | उन्होंने 'अन्धे मोड़ से आगे', 'तीसरी हथेली', 'यात्रा-मुक्त', 'दूसरे देशकाल में', 'यह कहानी नहीं' और 'ग़मे हयात ने मारा' यह छ: कहानी संग्रह लिखे हैं | इन कहानी संग्रहों में कुल मिलाकर तिरेपन कहानियाँ संग्रहित है | राजी सेठ की 'उसका आकाश', 'एक बड़ी घटना', 'खेल','गलियारे' आदि कहानियों में अपंग, बिमार,पक्षाघात से पीड़ित वृद्धों की मन:स्थितियों का चित्रण हुआ है | 'समांतर चलते हुए', 'तीसरी हथेली', 'मैं तो जन्मा ही' आदि कहानियों में अविवाहित कामकाजी नारी का चित्रण मिलता है | जो पारिवारिक जिम्मेदारियों के तले दबी हुई दिखायी देती है | राजी सेठ की कुछ कहानियों में नारी की द्वंद्वात्मक स्थिति का चित्रण किया गया है | राजी सेठ की 'यात्रामुक्त', 'आमने-सामने','घोड़ों से गधे','कब तक'आदि कहानियों में उच्चवर्गीय लोगों के शोषण से पीड़ित निम्नवर्गीय

लोगों का चित्रण मिलता है |

राजी सेठ की कुछ कहानियों में व्यंग्य भी दिखायी देता है | 'अन्तहीन'कहानी में सरकारी दफ्तरों की अव्यवस्था पर, 'काया प्रवेश' में डॉक्टरी व्यवसाय पर तो 'लेखक गृह में लेखक'कहानी में लेखकों की प्रवृत्ति पर और 'परमा की शादी' कहानी में सामाजिक संस्था चलाने वाली स्त्रियों पर व्यंग्य कसा है | राजी सेठ की 'किसका इतिहास', 'बाहरी लोग', 'मुलाकात', 'ठहरो इंतजार हुसैन' आदि कहानियों में देशविभाजन से उपजी त्रासदी का वर्णन मिलता है | उनकी कुछ कहानियाँ ऐसी है, जिसमें नारी अत्याचारों के खिलाफ़ खड़ी दिखायी देती है | वह अपनी अलग पहचान बनाए रखने हेतू प्रयास करती दिखायी देती है | 'अपने विरुद्ध', 'मेरे लिए नहीं', 'उसी जंगल में' आदि कहानियों में स्वाभिमान से जी रही नारी का चित्रण किया है | राजी सेठ की 'विकल्प','मीलो लंबा पुल'आदि कहानियों में पाश्चात्य संस्कृति के रंग में रंगे युवा पीढ़ी का चित्रण किया है |

राजी सेठ ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से मानव समाज और जीवन से जुड़ी अनेकविध समस्याओं का चित्रण किया है | वर्तमान समय में मानव का जीवन विभिन्न समस्याओं और संघर्षों से पीड़ित है | वर्तमान समय में सबसे बड़ी समस्या है-दांपत्य संबंधों में होने वाली टकराहट | प्राचीन समय में पति-पत्नी का व्यक्तित्व मिलकर एक हो जाता था | किन्तु आज पति-पत्नी के बीच दरारें आने लगी है | आधुनिक जीवन की बहुत बड़ी विसंगति पति-पत्नी के बीच उभरने वाले तनाव, टूटन ,कडुवाहट, मनमुटाव और दरकन है | राजी सेठ के कथा साहित्य में दांपत्य जीवन की इन समस्याओं का सूक्ष्मता से अंकन किया गया है |

उनके कथा साहित्य में आर्थिक और नारी समस्याओं के साथ आज का मनुष्य जिन समस्याओं से अधिक त्रस्त है,उन समस्याओं का चित्रण बड़ी मात्रा में हुआ है | वह है -अलगाव,अंतर्द्वंद्व,संत्रास,अकेलेपन, तनाव की

समस्या | राजी सेठ ने 'उसका आकाश', 'एक बड़ी घटना', 'इन दिनों' इन कहानियों में वृद्धों की समस्या का जो चित्र प्रस्तुत किया है, वह संवेदनक्षम मन को चीरनेवाला है | उनकी कुछ कहानियों में देश विभाजन की समस्या का अंकन हुआ है, जिसमें निर्वासित व्यक्ति की संवेदनाओं को अभिव्यक्त किया है |

भावपक्ष की तरह कला की दृष्टि से देखा जाये तो राजी सेठ एक चतुर, विवेकशील व सजग कथा शिल्पी है | राजी सेठ की सबसे बड़ी ताकत है, उनकी भाषा | भाषा से उनका संबंध अनुसरण का नहीं,बल्कि सृजनात्मकता का है | भाषा पर उनका अधिकार है | बनी बनायी राहों पर चलना उनके स्वभाव में नहीं है | भावों के अनुरूप भाषा को ढ़ालने का मादा भी वे रखती हैं | भाषा मूलतःमानव समाज की ही एक रचना है, इसलिए मानव चरित्र के उद्‌घाटन में उसकी अभिव्यक्ति अधिक सहज होती है | कोई भी साहित्यकर भाषा के सहारे ही अपने कथा साहित्य को महत्तम बनाने की कोशिश करता है | राजी सेठ ने भी अपनी भाषा द्वारा अपने कथा साहित्य को महत्तम बनाया है |

राजी सेठ के कथा साहित्य में भाषा के विविध रूप दृष्टिगोचर होते है | उन्होंने पात्रों के आंतरिक स्थितियों का चित्रण करने के लिए बिंबों, प्रतीकों का सहारा लिया है | राजी सेठ ने अपने कहानियों और उपन्यासों में अधिकतर स्थानों में काव्यात्मक भाषा का रूप भी अपनाया है | उन्होंने समाज में व्याप्त शोषण, अन्याय, अंधविश्वास और आडंबर आदि विषयों पर व्यंग्यात्मक भाषा द्वारा प्रहार किया है | उनके कथा साहित्य में पात्रों और घटनाओं की अभिव्यक्ति संकेतों द्वारा हुई है |

राजी सेठ ने पात्रों की मानसिकता को उद्‌घाटित करने के लिए उपमाओं का प्रयोग किया है | उन्होंने कथ्य को ओर उत्कृष्ट बनाने के लिए सूक्तियों का प्रयोग किया है | साथ ही राजीजी ने भाषिक सौंदर्य को बढ़ाने

के लिए अपने कथा साहित्य की भाषा में बड़े विवेकपूर्ण ढंग से शब्द स्तरीय और वाक्य स्तरीय विचलनों का प्रयोग किया है | उन्होंने अपनी भाषा को सजीव बनाने के लिए और भाषिक सामर्थ्य बढ़ाने के लिए प्रचलित और स्वनिर्मित मुहावरों और कहावतों का प्रयोग किया है | उन्होंने भाषा में खुरदरे, देसीवत का अहसास कराने के लिए लोक भाषा का प्रयोग किया है | अपने कथा साहित्य में नवीनता लाने हेतु राजीजी ने भाषा में लेखिम स्तरीय, समांतरमूलक प्रयोग आदि रूपों को भी अपनाया है |

राजी सेठ ने भाषिक सामर्थ्य के साथ साथ मानव मन की गुत्थियों और उलझनों की तह को खोलने के लिए वर्णनात्मक, आत्मकथात्मक, स्मृतिपरक, मनोविश्लेषणात्मक, चेतनाप्रवाह, पत्रात्मक,डायरी शैली और संवाद शैली, स्वप्न शैली आदि विभिन्न शैलियों का प्रयोग अपने कथा साहित्य में किया है |

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि राजी सेठ हिंदी की एक विशिष्ट लेखिका हैं | रमेश दवेजी ने अपनी पुस्तक 'राजी सेठ संवेदना का कथा दर्शन'के प्राक्कथन में राजी सेठ के कथा साहित्य की महत्ता को दर्शाते हुए कहते हैं कि "राजी सेठ को न पढ़ने के बारे में इस तरह से सोचा जाए तो उन्हें न पढ़ना अर्थात कथा साहित्य के स्तर की उत्कर्ष यात्रा से वंचित रहना है | उन्हें न पढ़ना अर्थात अपने ही कहानी मानस की हानि करना है | हानि अर्थात संवेदन के सृजन की हानि,मर्म के स्पर्श की हानि, कथा के शिल्प को पहचानने की हानि और चरित्रों में विचलित होते चिंतन और मानसिक द्वंद्व को परखने की हानि,विचार,भाषा और संवेदन के स्पर्श से कैसे दर्शन में परिणत होता उसकी हानि और अंतत: उस दृश्य की हानि जो कथा में है और उस अदृश्य की हानि जिसकी जिज्ञासा कहानी जगाती है |"[१]